

## शिव तांडव स्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले  
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गुतुङ्गमालिकाम् ।  
डमडुमडुमडुमन्निनादवडुमर्वयं  
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्त्रिलिम्पनिर्झरी  
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।  
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके  
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥

धराधरेन्द्रनंदिनीविलासबन्धुबन्धुर  
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।  
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि  
क्वचिद्दिगम्बरे(क्वचिच्चिदम्बरे) मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा  
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।  
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे  
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर  
प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।  
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटक  
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा  
निपीतपञ्चसायकं नमत्रिलिम्पनायकम् ।  
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं  
महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल  
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।  
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक  
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्  
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।  
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः  
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा  
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।  
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं  
गजच्छिदांधकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९॥

अगर्व सर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी  
रसप्रवाहमाधुरी विजृम्भणामधुव्रतम् ।  
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं  
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस  
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।  
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गत्तुङ्गमङ्गल  
ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्  
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।  
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः  
समं प्रव्रितिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥१२॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्  
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वहन् ।  
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः  
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

निलिम्प नाथनागरी कदम्ब मौलमल्लिका-  
निगुम्फनिर्भक्षरन्म धूष्णिकामनोहरः ।  
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनींमहनिशं  
परिश्रय परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥१४॥

प्रचण्ड वाडवानल प्रभाशुभप्रचारणी  
महाष्टसिद्धिकामिनी जनावहृत जल्पना ।  
विमुक्त वाम लोचनो विवाहकालिकध्वनिः  
शिवेति मन्त्रभूषगो जगज्जयाय जायताम् ॥१५॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं  
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम् ।  
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं  
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् ॥१६॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं  
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।  
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां  
लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शम्भुः ॥१७॥

इति श्रीरावण कृतम्  
शिव ताण्डव स्तोत्रम्सम्पूर्णम्